दोहा

विष्णु सुनिए विनय सेवक की चितलाय *

कीरत कुछ वर्णन करूं दीजै ज्ञान बताय *

चौपाई

नमो विष्णु भगवान खरारी,

कष्ट नशावन अखिल बिहारी *

प्रबल जगत में शक्ति तुम्हारी,

त्रिभुवन फैल रही उजियारी *

सुन्दर रूप मनोहर सूरत,

सरल स्वभाव मोहनी मूरत *

तन पर पीताम्बर अति सोहत,

बैजन्ती माला मन मोहत *

शंख चक्र कर गदा बिराजे,

देखत दैत्य असुर दल भाजे *

सत्य धर्म मद लोभ न गाजे,

काम क्रोध मद लोभ न छाजे *

सन्तभक्त सज्जन मनरंजन,

दनुज असुर दुष्टन दल गंजन *

सुख उपजाय कष्ट सब भंजन,

दोष मिटाय करत जन सज्जन *

पाप काट भव सिन्धु उतारण,

कष्ट नाशकर भक्त उबारण *

करत अनेक रूप प्रभु धारण,

केवल आप भक्ति के कारण *

धरणि धेनु बन तुमहिं पुकारा,

तब तुम रूप राम का धारा *

भार उतार असुर दल मारा,

रावण आदिक को संहारा *

आप वाराह रूप बनाया,

हरण्याक्ष को मार गिराया *

धर मत्स्य तन सिन्धु बनाया,

चौदह रतनन को निकलाया *

अमिलख असुरन द्वन्द मचाया,

रूप मोहनी आप दिखाया *

देवन को अमृत पान कराया,

असुरन को छवि से बहलाया *

कूर्म रूप धर सिन्धु मझाया,

मन्द्राचल गिरि तुरत उठाया *

शंकर का तुम फन्द छुड़ाया,

भस्मासुर को रूप दिखाया *

वेदन को जब असुर डुबाया,

कर प्रबन्ध उन्हें ढुढवाया *

मोहित बनकर खलहि नचाया,

उसही कर से भस्म कराया *

असुर जलन्धर अति बलदाई,

शंकर से उन कीन्ह लडाई *

हार पार शिव सकल बनाई,

कीन सती से छल खल जाई *

सुमिरन कीन तुम्हें शिवरानी,

बतलाई सब विपत कहानी *

तब तुम बने मुनीश्वर ज्ञानी,

वृन्दा की सब सुरति भुलानी *

देखत तीन दनुज शैतानी,

वृन्दा आय तुम्हें लपटानी *

हो स्पर्श धर्म क्षति मानी,

हना असुर उर शिव शैतानी *

तुमने ध्रुव प्रहलाद उबारे,

हिरणाकुश आदिक खल मारे *

गणिका और अजामिल तारे,

बहुत भक्त भव सिन्धु उतारे *

हरहु सकल संताप हमारे,

कृपा करहु हरि सिरजन हारे *

देखहुं मैं निज दरश तुम्हारे,

दीन बन्धु भक्तन हितकारे *

चहत आपका सेवक दर्शन,

करहु दया अपनी मधुसूदन *

जानूं नहीं योग्य जब पूजन,

होय यज्ञ स्तुति अनुमोदन *

शीलदया सन्तोष सुलक्षण,

विदित नहीं व्रतबोध विलक्षण *

करहुं आपका किस विधि पूजन,

कुमति विलोक होत दुख भीषण *

करहुं प्रणाम कौन विधिसुमिरण,

कौन भांति मैं करहु समर्पण *

सुर मुनि करत सदा सेवकाई

हर्षित रहत परम गति पाई *.

दीन दुखिन पर सदा सहाई,

निज जन जान लेव अपनाई *

पाप दोष संताप नशाओ,

भव बन्धन से मुक्त कराओ *

सुत सम्पति दे सुख उपजाओ,

निज चरनन का दास बनाओ *

निगम सदा ये विनय सुनावै,

पढ़ै सुनै सो जन सुख पावै *

दोहा

भक्त हृदय में वास करें पूर्ण कीजिये काज *

शंख चक्र और गदा पद्म हे विष्णु महाराज *